12

201hi12

इसे जगाओ

सपना वह नहीं होता जो नींद में आए, बल्कि वह होता है, जिसे पूरा किए बिना नींद न आए। अब आप ही तय कीजिए कि सपना पूरा करने के लिए आप नींद में पड़े रहना पसंद करेंगे या जागकर, सजग होकर, सतर्क होकर सपने को पूरा करेंगे? यह भी सोचिए कि क्या बिना जागे कोई काम पूरा हो सकेगा? यदि नहीं, तो फिर आलस्य क्यों? नींद क्यों? तंद्रा क्यों? क्यों न जागें और सजग होकर इस कविता का आनंद लें। क्या हम उन पक्षियों से कुछ सीखेंगे नहीं, जो भोर में हमारे द्वार हमें जगाने आए हैं?

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- समय पर सजग रहने का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- सोकर पड़े रहने और जागने वाले व्यक्तियों के व्यवहार पर विश्लेषणात्मक चिंतन कर अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- किसी विपत्ति से घबराकर भागने और लक्ष्य को ध्यान में रखकर चलने में अंतर के बारे में उल्लेख सकेंगे;
- जीवन में समय-नियोजन के महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे;
- कविता का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कर सकेंगे।
- कविता की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप-12.1

नींद में रहने को 'सोना' और नींद से उठने को 'जागना' क्यों कहते हैं? आम तौर पर 'जागने' का लक्षण है- हरकत में आना, काम में लग जाना अथवा सावधान होना। इसीलिए

टिप्पणी

इसे जगाओ

कविता और गीतों में व्यक्ति, समाज या देश को जगाने के लिए आह्वान किया जाता है, देखिए–

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

इसी प्रकार के किसी गीत या कविता की पंक्तियाँ आप भी यहाँ लिखिए :

.....

.....

'जागना' की तरह ही 'चलना' का प्रयोग भी मनुष्य को गतिशील बने रहने, कुछ कर गुज़रने की प्रेरणा देने के लिए होता है, देखिए :

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं, तुम अमर मरो नहीं
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

किसी दूसरे गीत या कविता की ऐसी ही पंक्तियाँ याद करके यहाँ लिखिए :

.....

.....

12.1 मूल पाठ

आइए एक बार इस कविता को पढ़ लें :

भई, सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ !
भई, सूरज ! ज़रा इस आदमी को जगाओ !

वक़्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक़्त जागेगा यह

शब्दार्थ
पवन = हवा, वायु
बेख़बर = अनजान
वक्त = समय
बेवक़्त = असमय, अवसर बीत जाने पर

तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह ।

घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है
सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ,
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ ।

-भवानीप्रसाद मिश्र

टिप्पणी

शब्दार्थ
क्षिप्र = तेज़
सजग = जागा हुआ, चौकन्ना, सावधान

12.2 आइए समझें

12.2.1 अंश-1

आइए, अब हम कविता के अर्थ पर विचार करें। इसे समझने से पहले कविता की प्रथम दस पंक्तियों को पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों में सूरज, हवा और पक्षी- इन तीनों को संबोधित किया गया है। संबोधन का तरीका बड़ा ही आत्मीय है, जैसे हम घर के भीतर ही परिवार के किसी सदस्य से बात कर रहे हों-भई, सूरज, भई, पवन, भई, पंछी।

आप जानते हैं कि सूरज ज़िंदगी देने वाला है, वह हमें प्रकाश तो देता ही है, ऊष्मा भी देता है, जो इस संसार को प्राणवान बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। सूरज के निकलने पर ही मनुष्य और पशु-पक्षी जागते हैं और रोज़मर्रा के कामों में जुट जाते हैं।

जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रकृति का दूसरा अति आवश्यक तत्त्व है-हवा। हवा लगातार कभी तेज़, कभी हल्की और कभी बहुत हल्की चलती ही रहती है। हवा हमेशा गतिशील रहती है, सक्रिय रहती है। प्रकृति के जीवंत होने का एक और महत्त्वपूर्ण लक्षण है-पक्षियों का कलरव यानी पक्षियों का चहचहाना और उनकी अन्य आकर्षक गतिविधियाँ।

अब ज़रा बताइए कि अगर कोई आदमी सोया हुआ है, तो उसे जगाने के लिए आप क्या करेंगे? आप उसे हिलाएँगे, उसे आवाज़ देंगे, उसके कानों पर चिल्लाएँगे।

इस कविता में एक सोए हुए आदमी का चित्र है। मगर यह जो सोया हुआ आदमी है वह नींद में सोया हुआ नहीं है; बल्कि जैसे सोने वाला आदमी आस-पास के वातावरण से बेख़बर रहता है, उसी तरह यह आदमी इस अर्थ में सोया हुआ है कि उसके इर्द-गिर्द

की दुनिया में क्या कुछ घटित हो रहा है, इससे वह अनजान है। यह आदमी वक़्त को ठीक से नहीं पहचान रहा। दुनिया और समाज का आज का सच क्या है उसे पता नहीं है। वह इस सबसे बेख़बर सपनों में खोया हुआ है। क्या आप सपने देखने और सपनों में खोए रहने में अंतर बता सकते हैं? जी हाँ! सपने देखना और सपनों में खोए रहना–ये दो अलग-अलग स्थितियाँ हैं। सपने देखना आदमी की ज़िंदगी का महत्त्वपूर्ण अंग है। हम भविष्य के लिए सपने बुनते भी हैं और सपनों को साकार करने के लिए प्रयत्न भी करते हैं। लेकिन, सपनों में खोए रहने का अर्थ है- केवल कल्पना में डूबे रहना, जीवन में निष्क्रिय होना। जो आदमी सपनों में खोया रहता है, वह सपने के सच को पाने के लिए प्रयास करने का समय खो देता है और तंद्रा टूटने पर ख़ुद को वहीं का वहीं खड़ा पाता है।

अब आप समझ गए होंगे कि कवि ने किस ख़ूबसूरती से आम शब्दों का प्रयोग किया है। ऐसी सावधानी से कि बात तो विशेष है, किंतु शब्द आसान। तो आइए, कविता की इन पंक्तियों पर फिर से विचार करें।

भई, सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ!
भई, सूरज ! ज़रा इस आदमी
को जगाओ !

चित्र 12.1

हमारे आसपास ऐसे बहुत से लोग हैं, जो समय के सच को न पहचान कर, उसके साथ न चलते हुए अपने हवाई किले बनाते रहते हैं। दरअसल, वे लोग आँखें खुली होते हुए भी सोए हुए व्यक्ति के समान हैं। इस तरह की अनेक कहानियाँ आपने बचपन में पढ़ी या सुनी होंगी। शेख़चिल्ली की कहानी तो आपने अवश्य सुनी होगी, जिसमें शेख़चिल्ली सपनों में खोया रहता है और अपना सर्वस्व गँवा देता है। इसी प्रकार आपने टेलीविज़न पर 'मुंगेरीलाल के हसीन सपने' सीरियल देखा होगा, जिसमें मुख्य पात्र सपनों में ही खोया रहता है, उसे कुछ हासिल नहीं होता। कवि सूरज से ऐसे व्यक्ति को जगाने के लिए कहता है, उसके भीतर क्रियाशीलता की गरमी भर देने के लिए कहता है। वह हवा से कहता

है कि वह उसे हिलाकर उसकी नींद को भंग कर दे, उसके अंदर हरकत पैदा कर दे, ताकि वह उठे और समय के साथ कदम मिलाकर चल पड़े। कवि पक्षी से कहता है कि वह उस व्यक्ति के कानों पर चिल्लाए, ताकि उसका ध्यान अपने सपनों की दुनिया से निकलकर जीवन की वास्तविक दुनिया की ओर आए। वह वर्तमान के सच को पहचान कर अपनी सही भूमिका सही समय पर तय कर सके और लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाए।

टिप्पणी:

1. कवि ने सूरज, हवा और पक्षी-प्रकृति के इन तीन उपादानों को मुनष्य की तरह आत्मीय भाव से संबोधित करते हुए उनसे आग्रह किया है कि वे समय के साथ न चल पाने वाले आदमी का सच्चाई से परिचय कराएँ और उसके अंदर जागृति पैदा करें। यह प्रयोग बहुत सुंदर है। ये तीनों मानव-जीवन के आरंभ से ही उसके सबसे अधिक निकट के साथी हैं।
2. जगाना, हिलाना और चिल्लाना सोए हुए व्यक्ति को जगाने के तरीके हैं तथा इनके लिए क्रमशः सूर्य, वायु और पक्षी से अनुरोध करना, कविता के सौंदर्य को बढ़ाता है।
3. सूर्य, पवन, पक्षी प्रकृति के अंग हैं और मनुष्य के साथी भी। प्रकृति सोए हुए मनुष्य को जगाती है। जीवन में सोए हुए प्राणी को जागने की प्रेरणा देने में कवि प्रकृति को आधार बनाता है।

क्रियाकलाप-12.2

आपने पक्षी शब्द पढ़ा, जिसे पंछी भी कहा गया है। क्या आप जानते हैं कि पक्षी उसे कहते जिसके पक्ष (पर) हों? पक्षी को 'खग' भी कहा जाता है। 'ख' का अर्थ होता है–आकाश, उसमें जो गमन करता है वह 'खग' कहलाता है। पक्षी को 'विहग' भी कहा जाता है, यह भी इसीलिए कि वह आसमान में गमन करता है। एक ही अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

अपने इस अंश के बारे में पढ़ते हुए हवा के कुछ पर्यायवाचियों पर जरूर ध्यान दिया होगा। जी हाँ, टिप्पणी-2 में वायु और टिप्पणी-3 में पवन। हवा के अन्य पर्यायवाची हैं- अनिल, समीर, मारूत, वात आदि।

इसी तरह सूरज के भी अनेक समानार्थी शब्द हैं- दिनकर, भास्कर, सूर्य, मार्तंड, दिवाकर आदि।

- निम्नलिखित सूचियों को ध्यान से देखिए और सूची 'एक' के शब्दों का सूची 'दो' के समानार्थी शब्दों से मिलान कीजिए:

- **सूची-एक** **सूची-दो**

सूची-एक	सूची-दो
आग	पुष्प, सुमन, कुसुम
फूल	जल, वारि, अंबु
कपड़ा	पट, वस्त्र, चीर
बेटा	द्रुम, विटप, वृक्ष
पानी	पावक, अग्नि
आकाश	सुत, तनय, पुत्र
पेड़	नभ, गगन, व्योम

- इन शब्दों के और भी पर्यायवाची ढूँढिए और यहाँ लिखिए :

पुष्प –	जल –
वस्त्र –	वृक्ष –
अग्नि –	पुत्र –
आकाश –	

निम्नलिखित शब्दों में से पर्यायवाची-युग्म तलाश कीजिए:

विष्णु, शिव, स्त्री, हरि, मार्ग, नारी, पथ, जलज, भवन, गंगा, महेश, अरविंद, इमारत, लता, पृथ्वी, वसुधा, बेल।

12.2.2 अंश - 2

आइए कविता की आगे की पाँच पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं और कवि क्या कहना चाहता है, समझने का प्रयास करते हैं।

वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक़्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह !

आप यह तो जान ही चुके हैं कि इस कविता में कवि ने सूर्य, पवन और पंछी का आह्वान किया है कि वे सच से बेख़बर सोए और सपनों की दुनिया में खोए हुए आदमी को जगाएँ। इसी क्रम में कवि आगे कहता है कि इसे केवल जगाओ भर नहीं बल्कि समय पर जगाओ। अगर यह समय पर नहीं, जागा, तो इसके साथ के लोग आगे निकल जाएंगे अर्थात् दूसरे लोग तरक्की कर जाएँगे और यह पिछड़ जाएगा। समय बीत जाने पर जब इसे पिछड़ने का बोध होगा, तो यह उनकी बराबरी करने के लिए घबरा कर भागेगा यानी हड़बड़ाहट में कुछ करने का प्रयास करेगा और कुछ कर नहीं पाएगा। परिणाम यह होगा कि उसे क्रोध आएगा, मानसिक

चित्र 12.2

टिप्पणी

तनाव रहेगा, वह खुद से लड़ता रहेगा और परिणामस्वरूप वह जीवन में असफल होता चला जाएगा।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि जो लोग किन्हीं कारणों से जब किसी काम को टालते रहते हैं, तो ऐन वक़्त पर उन्हें घबराहट होने लगती है। आप परीक्षा को ही लीजिए। कुछ विद्यार्थी साल भर मन लगाकर पढ़ते रहते हैं, थोड़ी-थोड़ी मेहनत करते रहते हैं, उनका पूरा पाठ्यक्रम तैयार हो जाता है। ऐसे विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में भी सहज और शांत रहते हैं और उनका परीक्षाफल भी अच्छा रहता है। इसके विपरीत कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जो साल भर के समय को बहुत अधिक मानते हुए कहीं और व्यस्त रहते हैं। वे तब जागते हैं, जब परीक्षा के दिन नज़दीक आ जाते हैं। घबराहट में वे अपने आगे के समय का भी ठीक से उपयोग नहीं कर पाते। परीक्षा के समय तक उनको धुक-धुकी लगी रहती है, स्मरण शक्ति भी ठीक से काम नहीं करती। अक्सर इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें जो थोड़ा-बहुत आता है, उसे भी वे ठीक से नहीं लिख पाते।

पाठगत प्रश्न-12.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'भई, सूरज' में 'भई' संबोधन किस प्रकार का है-

   (क) औपचारिक ☐ (ख) आदरसूचक ☐

   (ग) श्रद्धासूचक ☐ (घ) आत्मीय ☐

2. इस कविता में किसे जगाने के लिए कहा गया है-

   (क) जो थककर सो गया है ☐ (ग) जिसे सपने देखना अच्छा लगता है ☐

   (ग) जो बैठा-बैठा ऊँघता है ☐ (घ) जो सच से बेख़बर है ☐

3. निम्नलिखित में से सही जोड़ों पर (√) तथा गलत पर (X) का निशान लगाइए-

   (क) पंछी - जगाना ( ) (ख) हवा - हिलाना ( )

   (ग) हवा - चिल्लाना ( ) (घ) सूरज - जगाना ( )

4. कवि ने सही वक्त पर जगाने की बात क्यों कही है,

   (क) दिन का समय गुज़र जाएगा ☐

   (ख) फिर उसके जागने का फायदा नहीं होगा ☐

   (ग) वह दुनिया के मुकाबले में पिछड़ जाएगा ☐

   (घ) वह आलसी बन जाएगा ☐

टिप्पणी

12.2.3 अंश–3

आइए, कविता की शेष पंक्तियों को पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं और समझने का प्रयास करते हैं।

घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है

सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ,
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ !

आप पढ़ चुके हैं कि कवि ने सच से बेख़बर सोए हुए आदमी को समय पर जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है। यह भी सही है कि सही समय पर अगर आदमी सचेत न हो तो वह हड़बड़ाने लगता है। कवि इसी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहता है कि घबरा कर भागने और क्षिप्र गति अर्थात् तेज़ गति से चलने में फ़र्क होता है। तेज़ गति का अर्थ तो सही अवसर पर सचेत होना है, सही मौके पर न चूकना है। जो सही अवसर का भरपूर उपयोग करते हैं, वे ही प्रगति करते हैं और जो सही अवसर पर चूक जाते हैं, वे लाख उठा- पटक और माथापच्ची करने पर भी प्रगति नहीं कर पाते। सही क्षण में सजग व्यक्ति ही लक्ष्य प्राप्त करता है। इसलिए कवि एक बार फिर सूरज, पवन और पक्षी से अनुरोध करता है कि वे समय के सच को न पहचान सकने वाले व्यक्ति को सच से परिचित कराकर उसके अंदर जागृति पैदा कर उसे क्रियाशील बनाएँ, यानी उसे सक्रिय करें।

आपने एक दिवसीय क्रिकेट मैच देखे होंगे। जब कोई टीम निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शुरू से ही रन औसत पर अपनी पकड़ बना कर चलती है, तो प्रायः कुछ ओवरों या बॉलों के शेष रहते हुए ही विजय प्राप्त कर लेती है। दूसरी ओर शुरू में बहुत धीमे खेलने वाली टीम पर जब रन औसत का दबाव बढ़ने लगता है, तो उसके कई अच्छे खिलाड़ी भी खराब शॉट खेलने के कारण कैच आउट या फिर रन आउट हो जाते हैं। ऐसे में अक्सर वह टीम मैच में पराजय की ओर बढ़ जाती है।

टिप्पणी

1. घबराकर भागने और क्षिप्र गति में अंतर बताकर कवि ने समय और अवसर पर सचेत रहने के महत्त्व को बड़ी सरलता से स्पष्ट कर दिया है।
2. बातचीत के लहज़े में तथा कम और आसान शब्दों में गंभीर बात कहने की कला बहुत समर्थ कवियों में ही पाई जाती है। इस कविता में यह कला देखी जा सकती है।

क्रियाकलाप-12.3

आपने यह पाठ पढ़ लिया है। इसमें निरंतर प्रयत्नशील रहने पर सफलता पाने वाले दो उदाहरण- क्रिकेट मैच और परीक्षा की तैयारी के दिए गए हैं। आपके अपने या आस-पास के जीवन में ऐसे बहुत से उदाहरण होंगे। उनमें से किसी एक के विषय में यहाँ लिखिए:

.....

टिप्पणी

.....

.....

12.3 भाव-सौंदर्य

आपने 'इसे जगाओ' कविता को पढ़ा, समझा और उसका आनंद लिया। इस कविता में भवानीप्रसाद मिश्र ने प्रकृति के उन उपादानों से व्यक्ति के अंदर जागृति का भाव पैदा करने का आग्रह किया है, जो सृष्टि के आरंभ से ही स्वयं क्रियाशील हैं। सूरज रोज़ उदित और अस्त होता है। वह संसार को जीवन-ऊर्जा प्रदान करता है और प्रकाश देता है। जीवन की समस्त हलचल का वह स्रोत है। हवा निरंतर चलती रहती है। वह भी संसार को जीवन प्रदान करती है। यह तो आप जानते ही हैं कि पक्षियों का कलरव प्रात:काल से ही जीवन के गीत सुनाता है। इस तरह सोए हुए या समय की गति न पहचानने वाले आदमी को जगाने और क्रियाशील होने का संदेश देने के लिए ये उचित माध्यम हैं। कवि ने यहाँ अपनी कल्पना और जीवन-जगत् के गहरे अनुभव का प्रयोग किया है। ज़रा सोचिए, मात्र इतना कह देने भर में वह सौंदर्य कहाँ है कि 'सोते मत रहो, जागो' या 'सपनों की दुनिया से निकलो और कर्म में लगो!' क्या इस कविता को पढ़कर आपने भी ऐसा ही महसूस किया है?

कवि ने प्रगति का अर्थ भी बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। प्रगति हड़बड़ाहट में भागने से नहीं होती, बल्कि विचारपूर्वक स्थितियों को समझकर, उनका आकलन करते हुए सही दिशा में प्रयास करने से होती है। इसके लिए आदमी को निरंतर सजग और सक्रिय रहने की आवश्यकता है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने इसी तरह आम जन-जीवन की रोज़मर्रा की ज़िंदगी की अनेकानेक साधारण-सी लगने वाली बातों को अपनी कविता का विषय बनाया है, वे सहज मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं।

12.4 भाषा-सौंदर्य

'इसे जगाओ' कविता को पढ़ते हुए आपने अनुभव किया होगा कि इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। अन्य कविताओं से तुलना करने पर हम पाते हैं कि भवानीप्रसाद मिश्र कविता में चमत्कार पैदा करने के लिए अप्रचलित या संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं करते। प्रचलित शब्दों और मुहावरों के प्रयोग से ही वे बड़ी से बड़ी बात कह देते हैं। उनकी एक कविता में कवि को संबोधित करते हुए कहा गया है :

जिस तरह मैं बोलता हूँ उस तरह तू लिख
और उसके बाद भी मुझसे बड़ा तू दिख।

टिप्पणी

इसे जगाओ

जिस तरह आम आदमी बोलता है, उस तरह की भाषा में उच्च कोटि की कविता करना अत्यंत कठिन काम है। भवानीप्रसाद मिश्र ने इस चुनौती को स्वीकार किया और वे निरंतर आम बोलचाल की भाषा में ही जनता की संवेदनाओं और भावों को व्यक्त करते रहे। वे भाषा की सादगी के समर्थ कवि हैं।

आपने इस कविता में संबोधन पर ध्यान दिया है ?

'भई, सूरज इसे जगाओ'– लगता है जैसे कवि अपने किसी बहुत ही आत्मीय से बात कर रहा हो। 'भई' के साथ संबोधन हिंदी बोलने वाली जनता की आम शैली है। जैसे– 'भई, खाना हो गया क्या? 'भई, तुम भी तो कर सकते थे?'

कवि ने सूरज के पर्यायों दिनकर, मार्तंड, सविता आदि का प्रयोग न करके 'सूरज' ही लिखा है, जो आम बोलचाल की भाषा है। इसी प्रकार पंछी आदि भी आम बोलचाल के शब्द हैं।

कविता में बातचीत की शैली अपनाई गई है। कवि मानो सूरज, हवा और पंछी से, जो उसके नितांत अपने हैं, अपने ही साथी को जगाने का अनुरोध कर रहा हो और फ़ौरन जगाने का कारण बताकर उन्हें तर्कसंगत ढंग से समझा रहा हो।

पाठगत प्रश्न-12.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कविता में 'क्षिप्र' किसे बताया गया है :
   (क) जो घबरा कर भागता है ☐
   (ख) जो तेज़ रफ़्तार से चलता है ☐
   (ग) जो अवसर को नहीं चूकता ☐
   (घ) जो क्षण भर को सजग रहता है ☐

2. सही कथन के आगे (√) और गलत कथन के आगे (×) चिह्न अंकित कीजिए :
   (क) घबरा कर भागने और क्षिप्र गति में अंतर है। ☐
   (ख) जो सही क्षण में सजग है, उसे घबराहट होती है। ☐
   (ग) जो सही क्षण में सजग है, वही क्षिप्र है। ☐
   (घ) घबरा कर भागने वाला व्यक्ति वास्तव में क्षिप्र नहीं होता। ☐

3. कवि ने जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है, क्योंकि वे
   (क) प्राकृतिक हैं ☐ (ख) क्रियाशील हैं ☐
   (ग) प्रगतिशील हैं ☐ (घ) अनुभवी हैं ☐

टिप्पणी

4. 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने कैसे शब्दों का प्रयोग किया है :

(क) संस्कृतनिष्ठ ☐ (ख) चमत्कारिक ☐

(ग) आलंकारिक ☐ (घ) बोलचाल के ☐

5. इस कविता में कवि ने किस शैली का प्रयोग किया है :

(क) वार्तालाप ☐ (ख) समास ☐

(ग) विवरणात्मक ☐ (घ) आत्मकथात्मक ☐

आपने क्या सीखा

1. इस कविता में आदमी को जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है।
2. सपनों में खोए रहने वाले आदमी को वास्तविकता से परिचित कराने की आवश्यकता बताई गई है।
3. दिशाहीन भटकने की अपेक्षा सोच-समझ कर प्रयास करने को महत्त्व दिया गया है।
4. इन विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रकृति के उपादानों का इस्तेमाल किया गया है।
5. भवानीप्रसाद मिश्र सहज मानवीय संवेदना के कवि हैं।
6. उन्होंने अपनी कविता में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है।
7. कविता साधारण शब्दों और आम भाषा में गंभीर विचारों को व्यक्त करने में समर्थ है।
8. कविता में बातचीत की शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।

योग्यता विस्तार

कवि परिचय

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म 1914 ई. में हुआ था। इन्होंने 'कल्पना' नामक पत्रिका का संपादन किया और आकाशवाणी में सेवारत रहे। ये गांधी जी के अहिंसावादी विचारों से बहुत प्रभावित थे। नौकरी से अवकाश पाने के बाद इन्होंने गांधी-साहित्य के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में भी काम किया। सन् 1985 ई. में इनका निधन हो गया।

भवानीप्रसाद मिश्र का जीवन सादगीपूर्ण था। उन्होंने कविता में भी सहज, सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। आम बोलचाल की भाषा में बातचीत के अंदाज में कविता करने के लिए वे 'नयी कविता' के विशिष्ट कवि के रूप में जाने जाते हैं। लयात्मकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है।

गीत फरोश, 'बुनी हुई रस्सी', 'त्रिकाल संध्या', 'चकित है दुख', खुशबू के शिलालेख' और 'कालजयी' इनकी प्रमुख काव्य पुस्तकें हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र की अन्य कविताएँ – सतपुड़ा के जंगल, गीत फरोश पढ़िए।

पाठांत प्रश्न

1. इस कविता में कवि ने किस-किस से सोए हुए आदमी को जगाने का आग्रह किया है? और क्यों?
2. 'बेवक्त जागने' का परिणाम क्या होता है?
3. 'जो सच से बेख़बर, सपनों में खोया पड़ा है' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

   क्षिप्र तो वह है
   जो सही क्षण में सजग है।

5. इस कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
6. भवानीप्रसाद मिश्र की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
7. 'इसे जगाओ' में क्या कवि यह कहना चाहता है कि आदमी सपने न देखे? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
8. 'इसे जगाओ' कविता में कवि सोए हुए को जगाने का अनुरोध क्यों करता है ?
9. निम्नलिखित कविता को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   देखता कोई नहीं है
   निर्बलों की यह निशानी
   लोचनों के बीच आँसू
   औ पगों के बीच छाले
   उठ, समय से तू मोरचा ले!

   (क) कवि का 'लोचनों के बीच आँसू' से क्या तात्पर्य है?

   (ख) 'पगों के बीच छाले' के पीछे कवि की क्या भावना है?

   (ग) इस कविता का आशय क्या है?

   (घ) इस कविता में कवि किसकी ओर संकेत करता है?

(i) रोने वालों की
(ii) घायल व्यक्तियों की
(iii) समाज के कमजोर लोगों की
(iv) स्वयं की

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 1. (घ), 2. (घ), 3. क (×), ख (√), ग (×), घ (√), 4. (ग)

12.2 1. (ग), 2. (क) (√), (ख) (×), (ग) (√), (घ) (√)
3. (ख), 4. (घ), 5. (क)